ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(8): 47-49
www.allresearchjournal.com
Received: 27-05-2024
Accepted: 30-06-2024

डॉ. गार्गी सिंह
एसोसियेट प्रोफेसर शिक्षा, श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मेडिकल साइंसेस, सिहोर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. गार्गी सिंह
एसोसियेट प्रोफेसर शिक्षा, श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मेडिकल साइंसेस, सिहोर, मध्य प्रदेश, भारत

अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का अध्ययन

डॉ. गार्गी सिंह

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का अध्ययन'' को प्राप्त करने के लिए सीधी विकासखण्ड के सभी विकासखण्ड के अनुसूचित जनजाति वर्ग बालिकाओं के 150 ग्रामीण और 150 शहरी क्षेत्रों से छात्राओं का चयन दैव न्यादर्श पद्धति से किया गया है। शोध अध्ययन हेतु सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता के मापन के लिए डॉ. (श्रीमती) अनूपी समैया एवं डॉ. सुनील बाजपेयी के परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग की ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर है। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर हैं।

कूटशब्द : अनुसूचित जनजाति, छात्राएँ, सामाजिक–सांस्कृतिक, गतिशीलता

प्रस्तावना
शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के समुचित विकास के लिये शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके उनमें ज्ञान, कौशल, अवबोध, अभिवृत्तियां, मूल्य एवं आत्म प्रत्यय आदि का समावेश करने का प्रयास करता है जिससे उसके नागरिक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सकें। इसके साथ–साथ शिक्षा समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा समाज को विघटित करने वाले विभिन्न कारकों यथा ईर्ष्या, वैमनस्य, पक्षपात, निहित स्वार्थ, अंधविश्वास धर्मान्धता, रूढ़िवादिता आदि का खंडन करके समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी मदद करती है।
भारतीय जनजातियों में सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक स्तरीय करण में तेजी से परिवर्तन हुआ है, पहले सामाजिक गतिशीलता का मुख्य आधार प्रदत्त परिस्थिति ही थी किंतु अब जनजातियों द्वारा अर्जित गुणों जैसे–विभिन्न पदों में शासकीय/अर्द्धशासकीय निजी संस्थानों में सेवायें, शिक्षा, दक्षता, प्रशिक्षण, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन, धन अर्जन आदि के आधार पर भी दृष्टिगोचर हुआ है। यद्यपि बाह्य सम्पर्क एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप जनजातियों की सामाजिक संरचना और संस्कृति में अनेक प्रकार की गतिशीलता एवं परिवर्तन देखने को मिले हैं। जैसे बिहार राज्य के प्रसार एवं भुइया, पालामत्र की पहाड़ी, घेनाज और जलपाईगुड़ी के कूज, बिहार के पोलिया, उत्तरप्रदेश की थाक, छोटा नागपुर के पठार की सन्थाल मुण्डा और कोल बघेलखण्ड पठार अन्तर्गत मध्यप्रदेश के सीधी जिले में गोड़, पनिका, कोल आदि जनजातियों में सामाजिक गतिशीलता की स्थिति पाई गई है।
भारत की अनेक जनजातियां इसी प्रकार से सामाजिक गतिशीलता के दौर में है, जिससे उनकी शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति ही विशिष्टता में अनेक परिवर्तन हुए हैं। देश में औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा, नवीन संचार के साधन, परिवहन के आधुनिक साधन, हिन्दूवाद, इसाई मिशनरी, प्रजातंत्र एवं पश्चिमी सभ्यता के सम्पर्क के कारण जनजातियों में सामाजिक गतिशीलता की गतिविधि में तीव्रता आई है। आज के पहले की भांति पृथक–पृथक संस्कृति की प्रतीक न होकर राष्ट्र की सभ्यता एवं जीवन की मुख्य धारा के साथ जुड़ी रही है तथा एक पूर्ण समाज का अंग बन रही है। जनजातियों का अन्य जनजातियों से सम्पर्क हुआ है। इस सम्पर्क के परिणामस्वरूप उनमें सहयोग, संघर्ष प्रतिस्पर्द्धा एवं एकीकरण की प्रक्रिया ने जन्म लिया है। भारत की विभिन्न जनजातियों में सामाजिक गतिशीलता की स्थिति दृष्टिगोचर हो रही है

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कपिल, एच.के. (1996)[1], कुमार, प्रमिला (1992)[2], कौल, लोकेश (1998)[3], प्रसाद, गोमती (2004)[4], तिवारी, डॉ.(श्रीमती) रंजना (2016)[5], निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन (2016)[6].

अध्ययन की आवश्यकता

किसी भी संस्था का उद्देश्य प्राप्त भौतिक संसाधनों का उपयोग कर मानव प्रकृति में पाये जाने वाले विभिन्न गुणों का अधिकतम विकास करना होता है। अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया जावेगा, कि अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता पर कितना सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

एच 1. ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।''

एच 2. "शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर है।"

परिसीमाएँ

1. शोध का क्षेत्र सीधी जिले के सभी विकासखण्ड तक ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं तक ही सीमित रहेगा।
3. अध्ययन की सुविधा हेतु मात्र 150 शासकीय एवं 150 अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाएं अथवा 150 ग्रामीण एवं 150 शहरी क्षेत्र के बालिकाओं को चुना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी जिले के सभी विकासखण्ड से 04–04 विद्यालय अर्थात शोध क्षेत्र के कुल 20 विद्यालयों का चयन किया गया है। चयनित विद्यालयों से 15–15 अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं अर्थात कुल 300 बालिकाओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता के मापन के लिए डॉ. (श्रीमती) अनूपी समैया एवं डॉ. सुनील बाजपेयी के परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया।

विधि एवं योजना

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि वर्णनात्मक अनुसंधान की मुख्य विधियों में से एक है। वर्णनात्मक अनुसंधान में शोध का संबंध वर्तमान से होता है। यह वर्तमान के तत्वों परिस्थितियों के संबंध में व्यक्तियों, वस्तुओं घटनाक्रमों आदि के विशय में प्रपत्र एकत्रित कर उनका विश्लेषण, विवेचन वर्गीकरण तथा मापन आदि का कार्य करता है। सर्वेक्षण अध्ययनों से स्पष्ट तथा निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति होती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान का उपयोग किया गया है।

शोध क्षेत्र का परिचय

सीधी जिला म.प्र. की राजधानी भोपाल से उत्तर पूर्वी दिशा में सड़क मार्ग से 635 किलो मीटर दूर है तथा रीवा संभाग के मुख्यालय से दक्षिण पूर्व में 80 किलोमीटर पर जिला मुख्यालय स्थित है। जिला सीधी मूलतः पठारी व पर्वतीय प्रदेश है इसका विस्तार 23°47′ से 24°42′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°18′ से 82°49′ पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है।

जिला सीधी मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्व क्षेत्र में स्थित है। यह प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। इसके पूर्व में उत्तर प्रदेश का मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिला, दक्षिण में छत्तीसगढ़ राज्य का कोरिया जिला पश्चिम में शहडोल तथा सतना जिला एवं उत्तर में रीवा जिला स्थित है। जिले की समुद्र तल से निम्नतम ऊँचाई 243.84 मी. तथा उच्चतम ऊँचाई 609.60 मी. है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 10526 वर्ग कि.मी. है। यह जिला पूर्व से पश्चिम 155 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण 95 कि.मी. फैला हुआ है। क्षेत्रीयता की दृष्टि से यह जिला भारत के कुल भू–भाग का 0.37 प्रतिशत है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पना की जांच हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट, सहसंबंध गुणांक की गणना की गयी है।

परिकल्पना क्रमांक 1: ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।''

सारणी 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	शहरी	150	58-64	18-26	2-59	1-97	5-56
2.	ग्रामीण	150	47-26	17-05			

df = 298

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 58.64 एवं 47.26 है। तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 18.26 व 17.05 प्राप्त हुआ। इनका df = 298 होगा। गणना से प्राप्त t मान 5.56 प्राप्त हुआ है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। इस प्रकार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

परिकल्पना क्रमांक 2: "शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर है।"

सारणी 2: शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	शासकीय	150	46-85	19-08	2-59	1-97	3-99
2.	अशासकीय	150	56-82	22-24			

df = 298

विष्लेशण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 46.85 एवं 56.82 है, एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 19.08 एवं 22.24 प्राप्त हुआ है। इनका df = 298 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 3.99 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1. 97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर हैं।
अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर है।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालिकाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता में सार्थक अन्तर हैं।

संदर्भ

1. कपिल, एच.के. सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1992.
2. कुमार, प्रमिला. म.प्र. भौगोलिक सर्वेक्षण, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1992.
3. कौल, लोकेश. शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली, 1998.
4. प्रसाद, गोमती. ''रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन'' पी–एच.डी. (शिक्षा) अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.), 2004.
5- तिवारी, डॉ.(श्रीमती) रंजना. "रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में हाई स्कूल में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत का विश्लेषणात्मक अध्ययन" Research Expo International Multidisciplinary Research Journal, 2016; Vol. VI Issue I, Jan. 2016, page 69-77.
6. निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन. "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत अ.जा. वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक अभिरुचि का समीक्षात्मक अध्ययन" (सतना जिले के विशेष सन्दर्भ में), शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), 2016.